# सामाजिक आन्दोलन के सिद्धान्त
## (Theories of Social Movement)

एम० एस० ए० राव ने अपनी पुस्तक Social Movement in India में तीन प्रकार के सामाजिक आन्दोलनों की व्याख्या की है उनके अनुसार वे कौन सी संरचनात्मक दशाएँ है तथा कौन सी प्रेरणादायक शक्तियाँ हैं जिनके द्वारा सामाजिक आन्दोलन उत्पन्न होता है और कौन से ऐसे सिद्धान्त हैं जो आ० के सिद्धान्तों की अवधारणा बताते हैं इनके अनुसार मुख्य रूप से सामाजिक आ० के सिद्धान्त तीन प्रकार के हैं जो संरचनात्मक दशाओं, प्रेरणात्मक शक्तियों की व्याख्या करते हैं कि इनसे किस प्रकार आ० जन्म लेते हैं :-

1- सापेक्ष वंचन का सिद्धान्त (Theory of Relative Deprivation)
2- तनाव सिद्धान्त (Strain Theory)
3- पुनर्निर्माण का सिद्धान्त (Revitalization Theory)

### (1). Theory of Relative Deprivation (सापेक्ष वंचन का सिद्धान्त)

शाब्दिक रूप में वंचना का तात्पर्य किसी वस्तु के न होने या उसके छीन लिये जाने या अभाव की स्थिति से है। एक व्यक्ति को एक ही समाज में किन वस्तुओं का अभाव होता है इस सम्बन्ध में जो भिन्नता अन्य व्यक्तियों से पाई जाती है, वह ही सापेक्ष वंचना को जन्म

Scanned with CamScanner

# Theories of Soial Movement

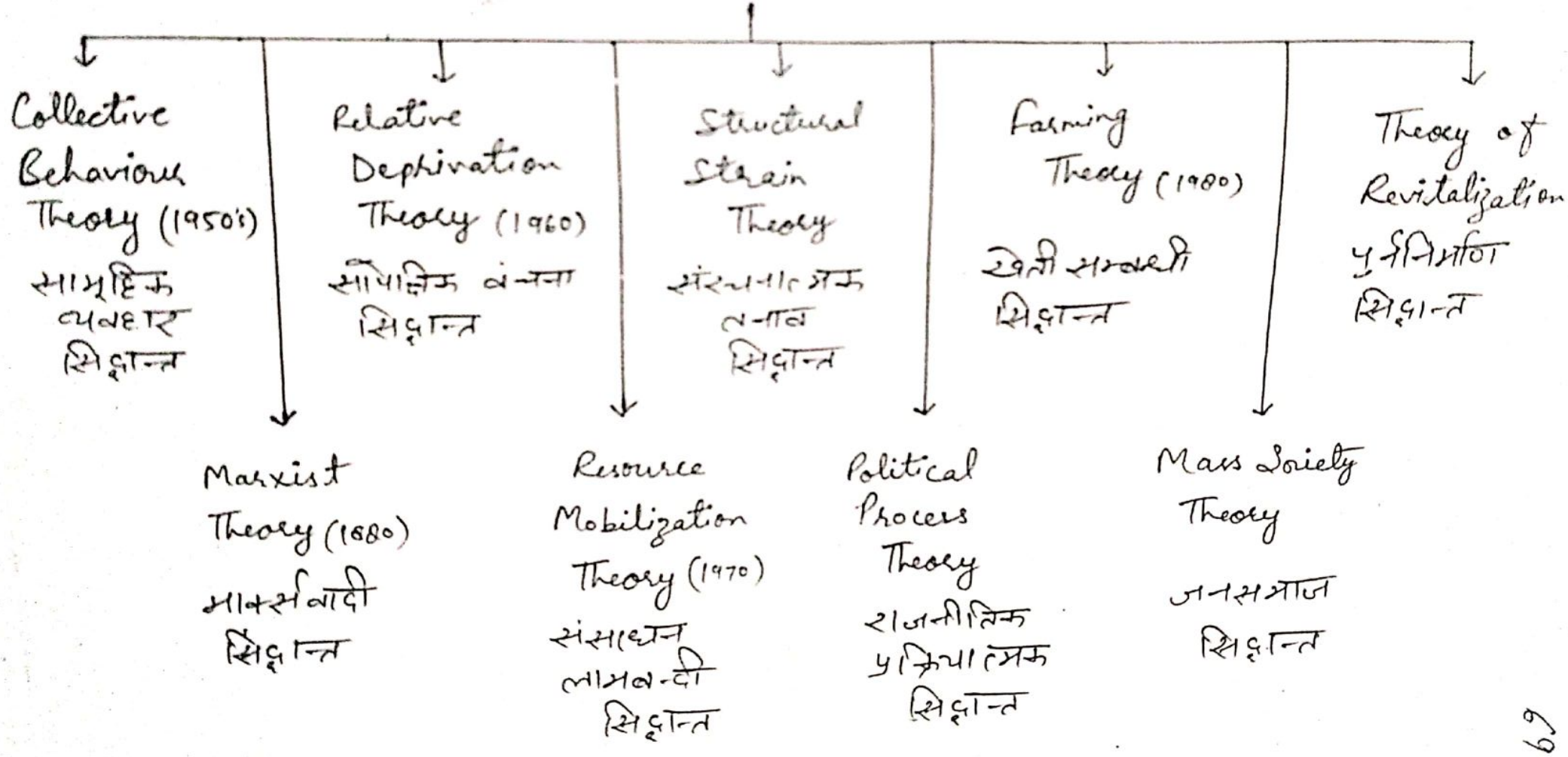




Scanned with CamScanner

देती है। इस अवधारणा को सर्वप्रथम Samual Stouffer ने अपनी पुस्तक American Soldier में अमेरिकी सैनिकों में पाई जाने वाली भावनाओं को प्रस्तुत किया है। तदोपरान्त R.K. Merton ने 1950 तथा Russimen (रसीमेन) ने 1966 में अपने-2 दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या की है। Samual Stouffer ने 1949 में अपनी विश्वविख्यात पुस्तक American Soldier में सापेक्ष वंचन की व्याख्या की थी। इसमें इन्होंने कहा था कि इस व्याख्या में सामाजिक मनोविज्ञान, और सर्वेक्षण पद्धति का बहुत योगदान है। Merton ने इस अवधारणा को अपने सन्दर्भ समूह सिद्धान्त के अन्तर्गत जुड़े व्यवहार के लिए किया है। Stouffer ने इस पुस्तक का विश्लेषण American Soldier की तथ्य सामग्री के आधार पर किया है और इसे सापेक्ष वंचन कहा है। Stouffer के अनुसार जब एक ही समूह के सदस्य आपस में एक दूसरे से अपनी तुलना करते हैं तो वे किसी न किसी रूप में समूह में अपनी स्थिति को उच्च, मध्यम या निम्न देखते हैं निम्न या मध्यम स्थिति रखने वाले समूहों के सदस्यों में स्थितियों के अनुसार एक अप्रतिमानता अथवा असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है वे भी प्रतिष्ठित सदस्यों की भाँति समूह में अपनी स्थिति देखना चाहते हैं ऐसा न होने पर उनमें सापेक्ष वंचन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार Stouffer के अनुसार American Soldier में जब सैनिक इस तथ्य का अनुभव करते हैं कि सेना में उनके अधिकारियों को जो लाभ मिल रहा है वह उन्हें नहीं मिलता तो वे अपने को ठगा हुआ अनुभव करते हैं और अपने ही समूह में वह एक वंचित व्यक्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

R. K. Merton ने इसी आधार पर सन्दर्भ समूह व्यवहार पर लेख लिखा है। सापेक्ष वंचितता के सिद्धान्त का मुख्य स्रोत Merton के लिए American Soldier है। Merton के अनुसार जब एक फौज का जवान अपनी तुलना फौज के अफसरों से करता है तो वह यह देखता है कि फौज के अधिकारियों का जीवन सुखमय है और वह खतरों से दूर हैं अधिकारी की तुलना में फौज के जवान की सुख सुविधाएँ कम होती हैं और वह शहादत को हमेशा तैयार रहता है। इस प्रकार के विचार Merton के अनुसार American Soldier में मिलते हैं। आगे चलकर Merton ने सापेक्ष वंचन के सिद्धान्त को सन्दर्भ समूह (Reference Group) सिद्धान्त में प्रयोग किया है। रूसीमैन ने इसे सन्दर्भ समूह असमानता की समस्या और सामाजिक न्याय के सम्बन्ध में प्रयोग किया है वास्तव

Scanned with CamScanner

में जब कोई व्यक्ति अथवा समूह किसी चीज़ को प्राप्त करने से वंचित रह जाता है तब इसे सापेक्षिक वंचना की संज्ञा द्वारा परिभाषित किया जाता है। यह सिद्धान्त इस तथ्य की व्याख्या करता है कि किस प्रकार समाज में अधिक से अधिक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और मांगों से वंचित रह जाते हैं जब कि दूसरे समाज के व्यक्ति इन सभी आवश्यकताओं से वंचित नहीं है और समाज उनकी सभी प्रकार की मांगों को पूरा कर रहा है। इस स्थिति में सापेक्ष वंचना से ग्रस्त व्यक्तियों के द्वारा सामाजिक आन्दोलन करना स्वाभाविक हो जाता है और वे अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध संगठित होकर सामाजिक आ० शुरू कर देते हैं। इसका उदाहरण किसान आ०, दलित आ०, महिला आ० तथा श्वेत प्रजातियों और नीग्रो प्रजातियों के बीच हुए आन्दोलनों में मिलता है। भारत में भी एक ऐसा धनी वर्ग है जिसके पास जीवनयापन की सारी सुविधाएँ पाई जाती हैं जबकि लगभग 50 करोड़ लोग इन सुविधाओं से वंचित हैं और उनकी जीवन शैली दयनीय है जीवन व्यतीत करने के पर्याप्त सुविधाएँ न मिलने के कारण यह निर्धन समूह आन्दोलन करने हेतु प्रेरित होता है। यही कारण है कि आज के समाज में अनुसूचित दलित जनजातियाँ और दुर्बल वर्ग आ० की प्रक्रिया

को अपना रहे हैं। इसी प्रकार के आन्दोलन पूर्व में भी अंग्रेजी शासकों, पूँजीपतियों तथा सामन्तों के मध्य देखे गए हैं जो समाज के एक वर्ग का शोषण कर रहे थे और उन्हें जीवन यापन की आवश्यकताओं और सुविधाओं से वंचित रख रहे थे। W. G. Runciman ने 1960 में अपने अध्ययन Relative Deprivation and Social Justice में सापेक्षिक वंचना का वर्णन किया है और संस्थागत असमानताओं और उनके प्रति जन चेतना पर लोगों के ध्यान को आकर्षित किया है और इस तथ्य का संकेत दिया जा रहा है कि वर्तमान काल में उच्च स्तरीय असमानताएँ सापेक्षिक वंचन के माध्यम से निम्न जीवन प्रत्याशा को जन्म दे रही है। सामाजिक वंचन का सिद्धान्त सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक संघर्ष पर आधारित है।

1970 में गुर्र ने सापेक्षिक वंचना के सिद्धान्त पर अनेक प्रकार से विश्लेषण किया उनके अनुसार यह सिद्धान्त मात्र मनुष्य की महत्वाकांक्षाओं के सन्दर्भ में ही लागू नहीं होता बल्कि अवलोकन की क्षमता अथवा योग्यता पर भी लागू होता है इन्होंने सापेक्षिक वंचना के तीन आधार बताएँ हैं —

1. सामान्य मूल्यों की प्रवृत्ति अथवा व्यवस्था
2. आर्थिक दशाएँ
3. राजनीतिक शक्ति और सामाजिक स्थिति

Scanned with CamScanner

इनके अनुसार इन तीनों आधारों में जितना फासला होगा महत्वाकांक्षाएँ स्थिर रहेंगी, योग्यताओं का पराभव होगा। महत्वाकांक्षाएँ जब बढ़ती हैं तब योग्यताओं का ह्रास होता है और जब महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि होती है तब योग्यताएँ स्थिर रहती हैं अर्थात् सापेक्षिक वंचना व्याप्त होती है।

समाज में सापेक्ष वंचना तभी उत्पन्न होती है जब समाज की संरचनात्मक व्यवस्था में उथल-पुथल होती है। जब समाज में मनुष्यों के बीच असमानता, अयोग्यता, शोषण अत्याचार देखने को मिलता है जब मनुष्य में एक दूसरे के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न होती है जो सापेक्ष वंचना को जन्म देती है और मनुष्य संगठित होकर सा. आन्दोलन की ओर अग्रसर होता है जिससे वह अपने अधिकारों को प्राप्त कर सके।

(2) Strain Theory (तनाव सिद्धान्त)

अमेरिकी समाजशास्त्री Smelser ने 1962 में इस सिद्धान्त की स्थापना की। उनका मत है कि संरचनात्मक तनाव सामूहिक व्यवहार को प्रभावित करता है यह तनाव विभिन्न प्रकार के मूल्यों, व्यवहार प्रतिमान, परिस्थितीय सुविधाओं में अनेक स्तरों में व्याप्त होते हैं और जब कभी संरचनात्मक तनाव का सामान्यीकरण होता है तब आन्दोलन की स्थिति उत्पन्न होती है।

विश्व के अनेक विकासशील और प्रगतिशील

Scanned with CamScanner

देशों में संरचनात्मक तनाव के अनेक स्वरूप देखने को मिलते हैं। यदि भारत के सन्दर्भ में व्याख्या की जाए तो यहाँ पर भी संरचना में परम्परात्मक और आधुनिकता के मध्य तनाव को देखा जा सकता है क्योंकि संरचना की दृष्टि से दोनों समाजों के मूल्यों, व्यवहारों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों एवं सामाजिक प्रक्रियाओं में अन्तर दिखाई देता है जो तनाव को जन्म देता है। इसी तरह समाजवादी व्यवस्था हिन्दुवादी विचारधारा तथा निरपेक्ष व्यवस्था के संरचनात्मक मूल्यों और मान्यताओं के मध्य अन्तर विद्यमान होता है। जिससे तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

Smelser का मत है कि आन्दोलन के तनाव का यह सिद्धान्त संरचनात्मक प्रकार्यात्मक सामाजिक प्रारूप की देन है। इस सिद्धान्त के अनुसार जब समाज संक्रमणकालीन अवस्था में होता है तब समाज में रहने वाले व्यक्ति के मूल्य, विचार, मान्यताएँ आदि टूटने लगती हैं और समाज में एक भ्रमकारी बदलाव की स्थिति उत्पन्न होती है इस बदली हुई संरचनात्मक व्यवस्था में सापेक्षिक तनाव का उत्पन्न होना स्वाभाविक है और यही तनाव समाज में सामाजिक आन्दोलन को प्रोत्साहित करता है।

Scanned with CamScanner

(3) पुनर्निर्माण सिद्धान्त (Revitalization Theory)

1956 में वालेश ने पुनर्निर्माण सिद्धान्त के सम्बन्ध में कहा था कि समाज के व्यक्तियों द्वारा आन्दोलन जानबूझकर व्यवस्थित ढंग से और जागरूक प्रयासों से इसलिए किया जाता है कि संतोषप्रद संस्कृति का पुनर्निर्माण हो सके। वालेश पुनर्निर्माण आ० के मुख्य चार चरणों की व्याख्या करते हैं—

1- सांस्कृतिक स्थिरता का काल
2- वह काल जिसमें व्यक्तियों में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।
3- संस्कृति के विघटन का काल
4- पुनर्निर्माण का काल

वालेश के अनुसार व्यक्ति जब समाज की वर्तमान व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं होते हैं तब वे सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध खड़े हो जाते हैं वे समाज में व्यवस्था के अनुरूप एक सकारात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। वालेश का यह सिद्धान्त किसी सीमा तक भारत जैसे विकासशील देश पर भी लागू होता है, भारत में विभिन्न राजनैतिक दल, समाजसेवी संस्थाएँ विभिन्न प्रकार की वैचारिकी के आधार पर आ० करती है कभी सम्पूर्ण क्रान्ति के माध्यम से पुनर्निर्माण की बात कही जाती है और कभी सर्वोदय समाज द्वारा। समकालीन समाज में भूमण्डलीकरण जैसी विचारधारा के द्वारा

आर्थिक, सामाजिक पुनर्निर्माण की बात कही जा रही है।

Smelser के अनुसार सभी आन्दोलनों के सिद्धान्त पूर्ण नहीं हैं सामाजिक आन्दोलनों का न तो कोई बना बनाया प्रारूप है और न ही सिद्धान्त। आन्दोलन तभी उत्पन्न होता है जब समाज की सामाजिक व्यवस्था में उथल-पुथल उत्पन्न होती है, इसके विभिन्न चरण होते हैं। परन्तु इन चरणों का कोई भी क्रम नहीं बनाया जा सकता है।

सामाजिक आन्दोलन किसी एक तथ्य से प्रभावित होकर नहीं व्यक्त होते हैं। सापेक्षिक वंचना और तनाव सिद्धान्त सामाजिक आन्दोलन के पोषक तत्व हो सकते हैं पर सब कुछ नहीं।

यदि भारत के सन्दर्भ में देखा जाए तो भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में कोई तत्व प्रभावी नहीं था बल्कि अनेक तत्व एक साथ मिलकर कार्य कर रहे थे जिसके परिणामस्वरूप एक दीर्घकालीन स्वतन्त्रता का आन्दोलन चला। किसी एक तत्व से किसी वस्तु को प्राप्त करने से वंचित रह जाना सामाजिक आन्दोलन का कारण नहीं बनता है। यदि देश के अधिकांश व्यक्ति भूखे, बेघर, बेरोजगार और संकट में हो तो निश्चित रूप से सापेक्षिक वंचना का सिद्धान्त प्रभावित हो सकता है। आधुनिक समय में समाज में तनाव समाज की एक विशेषता

बन चुका है। समकालीन समाज में छोटे-बड़े वर्ग के सभी व्यक्ति धनी-निर्धन, व्यवसायी और नौकरीपेशा आदि सभी तनाव से ग्रस्त है जिनके तनाव के अलग-2 स्तर दिखाई देती है परन्तु सामाजिक आन्दोलन इसके आधार पर नहीं होते है। वास्तविकता यह है कि समाज में सामाजिक आन्दोलन तभी होता है जब किसी समय समाज के किसी क्षेत्र में कोई समस्या इतनी गम्भीर बन जाती है कि क्षेत्रीय लोग एकत्रित होकर समस्या के निवारण हेतु आन्दोलन को खड़े हो जाते हैं और आगे चलकर यह आन्दोलन एक बड़े क्षेत्र में फैल जाते हैं जैसे - पर्यावरण तथा चिपको आन्दोलन आदि।

Scanned with CamScanner